वांगड़ प्रदेश में राजनैतिक चेतना का उद्‌भव एवं विकास

वैभव इणखिया (पीएच.डी. शोधार्थी)

सहायक आचार्य (विद्या सम्बल),
राजकीय महाविद्यालय, नाचना

वीरता और भक्ति का संगम स्थल तथा संस्कृति एवं साहित्य कला की त्रिवेणी हमारा प्रदेश राजस्थान देश का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। इस मरू प्रदेश को समय–समय पर विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है। महर्षि वाल्मिकी ने इसे 'मरूकान्तर' तथा कर्नल जेम्स टॉड ने इस प्रदेश का 'रायथाना' कहा तथा ब्रिटिश काल में यह प्रदेश 'राजपुताना' नाम से पुकारा जाता था।

स्वतंत्रता के समय राजस्थान 19 देशी रियासतों, तीन बड़े ठिकानों तथा एक केन्द्र शासित प्रदेश में बंटा हुआ था। इन 19 रियासतों में डूंगरपुर और बांसवाड़ा रियासतें भी शामिल थी। 13वीं शताब्दी के मध्य में मेवाड़ के स्वामी सांमतसिंह ने वागड़ में जाकर गुहिल वंशी राज्य की स्थापना की थी। अनेक घटनाओं के बाद वांगड़ राज्य के दो भाग डुंगरपुर और बांसवाड़ा बने।

19वीं शदी के अंत तक बांसवाड़ा व डूंगरपुर राज्य सबसे पिछड़े राज्य थे। राजस्थान के लोगों में स्वामीभक्ति व परम्परागत प्रेम के भाव कूट–कूट कर भरे हुए थे। राजनैतिक चेतना का अभाव था, शिक्षा के लिए कुछ ही स्कूलें थी, शिक्षा प्राथमिक स्तर तक ही थी और धार्मिक व सामाजिक बुराईयां प्रचलित थी। आर्थिक दृष्टि से भी लोग पिछ़डे थे। 20वीं शदी के प्रारम्भिक वर्षो में 'सम्प सभा' संस्था जिसने जनता की स्थिति सुधारने के प्रयासों को बल दिया। इस सम्प सभा के परिणामस्वरूप राज्य में राजनैतिक चेतना के प्रति जागरूकता आयी और बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिलों में राजनैतिक चेतना के साथ–साथ यहां पर सामाजिक विकास भी प्रारम्भ हुआ। दक्षिण राजस्थान में स्थित डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा जिले जनजाति बहुत क्षेत्र माने जाते है और राजनैतिक जागृति के लिए यहां पर चले स्वतन्त्रता व जनजाति आन्दोलनों ने वागड़ के लोगों के सामाजिक उत्थान व राजनैतिक चेतना प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक 'एनाल्स एण्ड एक्टीवीटीज और राजस्थान' में प्राचीन इतिहास एवं स्वाधीनता आन्दोलन के लिए संघर्ष में अपने पूर्वजों के वीरतापूर्ण कार्यों का गुणगान पढ़कर, राजस्थान के पढ़े–लिखे वर्ग में आत्मसम्मान व स्वाभिमान के भाव जागृत हुए।

राजस्थान में क्रांतिकारियों केसरीसिंह बारहठ, अर्जुनलाल सेठी, जमनालाल बजाज, मोतीलाल तेजावत, नानकजी भील आदि ने राजनैतिक चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई। 1947 ई. की रास्तापाल घटना ने जिसमें कालीबाई भील द्वारा अपने गुरू सेंगा भाई के लिए अंग्रेजों से भिड़ गई थी, ने भी जन जागृति फैलाई। इनके अलावा किसानों की मांगों के लिए डुंगरपुर में 1945 ई. में भोगीलाल पाण्ड्या ने प्रयास किए और बांसवाड़ा में 1945 ई. में विनोद चन्द्र कोठारी द्वारा रियासती अधिकारियों के सम्मुख प्रजा की विभिन्न मांगों को प्रस्तुत किया तथा समाधान के प्रयास किए।

धीरे–धीरे इस क्षेत्र के लोगों में जन जागृति में वृद्धि होने लगी, लोगों द्वारा अब राजनैतिक संस्थाओं की स्थापना की जाने लगी और खुले आम राज्य से निर्वासन आदेशों की अवहेलना की जाने लगी। बांसवाड़ा प्रजामंडल के संस्थापक भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी ने बाम्बे से संग्राम नामक समाचावर पत्र निकाला जिससे भी यहां राजनैतिक चेतना का विकास हुआ। मणिशंकर नागर व धूलजी भाई भावसार एवं विजया बहिन भावसार इनके द्वारा 'महिला मण्डल' की स्थापना की गई।

डूंगरपुर प्रजामण्डल के संस्थापक भौगीलाल पाण्ड्या, हरिदेव जोशी व गौरीशंकर उपाध्याय इनके द्वारा यहां पर राजनैतिक जागृति लाने में महत्वपूर्ण भूमि अदा की। यहां पर हुई अन्य घटनाओं जैसे–रास्तपाल घटना, पुनावाड़ा घटना, नीमड़ा घटना (सिरोही), पाल दाधवाव नरसंहार (गुजरात) ने भी यहां के लोगों में जन जागृति की भावना को प्रबल किया।

मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में 'एकी आन्दोलन' के लिए एकत्रित हुए लोगों पर अंग्रेजों द्वारा गोलियां चलाई गई। 1000 आदिवासी मारे गए। आदिवासियों पर अत्याचार और शोषण से खफा तेजावत ने स्वयं को सामाजिक कार्यों और सुधारों के लिए समर्पित कर दिया। आज भी स्थानीय लोग इसे गीतों में गाते है–'हंसु दुखी, दुनिया दुखी'। इनके अलावा डुंगरपुर रियासत में प्रयाण सभाएं आयोजित हुई। इन रियासतों की अन्यायपूर्ण नीतियों के विरूद्ध जनता में जागृति पैदा करने के उद्देश्य से 1944 में सभाएँ आयोजित की गई। इस तरह राजस्थान में इन जनजातियों द्वारा किए गए आन्दोलनों से अंग्रेजी शासन के विरूद्ध प्रतिक्रियाएं होने लगी। जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य को कमजोर करने का कार्य किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय मारवाड़, अलवर, भरतपुर के साथ डूंगरपुर रियासत ने भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने की घोषणा की थी।

गोविन्द गुरू ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से अपना सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म और समाज की सेवा में समर्पित किया था।

गोविन्द गुरू ने अपनी गतिविधियों का केन्द्र वांगड़ प्रदेश को बनाया था, इन्होंने आदिवासी क्षैत्र के निवासियों में शिक्षा की अलख जगाने का काम किया। इन्होंने 1890 ई. में भगत आन्दोलन चलाया। इसमें अग्नि देवता को इस आन्दोलन का प्रतीक माना गया। अनुयायियों को इस अग्नि की धूनी के समक्ष खड़े होकर पूजा करनी होती थी। 1883 ई. में इन्होंने 'सम्प सभा' की स्थापना की, और समाज में आई कुरूतियों को दूर करने का प्रयास किया–जैसे–मांस, शराब, चोरी, व्याभिचार से दूर रहने के लिए वांगड़ प्रदेश के लोगों को जागृत किया।

इन्होंने विद्यालय स्थापित करके बच्चों को शिक्षित करने, अंग्रजों को लगाने नहीं देनें, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने व स्वदेशी चीजों का प्रयोग करने के लिए चेतना फैलाई।

17 नवम्बर 1913 ई. मानगढ़ पहाड़ी पर पूलिस ने कर्नल शटन के नेतृत्व में गोलियां चलाई, जिसमें 1500 लोग मारे गए, गोविन्द गुरू को गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ दिनों बाद वह जेल से भाग गए। 1931 ई. में गुजरात में इनका देहान्त हो गया।

19वीं शताब्दी में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलनों से भी भारतीय शब्दीयता के विकास को बल मिला। राजस्थान में स्वतंत्रता से पूर्व जनजागरण लाने का कार्य जिन–जिन नेताओं ने किया था उनमें देशभक्ति का जज्बा था।

वांगड़ प्रदेश में राजनैतिक चेतना का श्रीगणेश यहां की जनजातियों एवं किसानों ने किया था। राजस्थान के आदिवासी क्षैत्रों में भील, मीणा, और गरासिया जनजातियां रहती है। इन्होंने परम्परागत अधिकारों पर आंच आने पर विरोध प्रकट किया, चाहे वह देशी राज्यों के विरूद्ध हो या अंग्रेजों के खिलाफ हो, इन्होंने वीरता पूर्वक सामना किया।

मोतीलाल तेजावत (1888–1963) ने स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं आदिवासी क्षैत्रों में जनजाग्रति को फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन्होंने 'एकी आन्दोलन' (1921–22) में चलाया। गोविन्द गुरू (1858–1931) ने वागड़ प्रदेश में भीलों के उत्थान के लिए 'भगत आन्दोलन' चलाया जिसमें भीलों में सामाजिक व राजनैतिक जागृति की भावना पैदा हुई।

गोविन्दगुरू ने डूंगरपुर, मालवा, इडर व मेवाड में भीलों और गरासियों को 'सम्प सभा' के माध्यम से संगठित किया। इनके अलावा भौगीलाल पंड्या, माणिक्यलाल वर्मा और गौरीशंकर उपाध्याय आदि का भी राजनैतिक चेतना जगाने में योगदान रहा।

इन्होंने भील क्षैत्रों में पौढ़ शालाएं, हॉस्टल व शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की, राजस्थान में राजनैतिक चेतना जागृत करने व शिक्षा प्रसार करने में आर्य समाज का कार्य भी महत्वपूर्ण था। समाचार पत्रों, प्रेस आदि की भी जनजागृति फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

राजनैतिक चेतना जगाने में महिलाओं की भी भूमिका रही है जिनमें अंजनादेवी, रतन चौधरी व डूंगरपुर की भील बालिका कालीबाई महत्वपूर्ण थी। इनके अलावा कवियों का योगदान, प्रजामंडल आन्दोलन, क्रांतिकारियों की भूमिका व व्यापारी वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण रही थी।

संदर्भ ग्रथ सूची (Bibliography) –

स्त्रोत –

प्राथमिक स्त्रोत–

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
2. प्रजामंडल रिकार्डस
3. बांसवाड़ा व डूंगरपुर की रियासतकालीन बहियां

द्वितीयक स्त्रोत–

1. यादव, कमल – देशी रियासतों में राजनैतिक चेतना और जन आन्दोलन, जयपुर, 1993
2. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद – डूंगरपुर राज्य का इतिहास
3. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद – बांसवाड़ा राज्य का इतिहास
4. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद – राजपूताने का प्राचीन इतिहास
5. शर्मा, व्यास – राजस्थान का इतिहास
6. बोहरा, मलिक – डूंगरपुर राज्य के इतिहास के कतिपय पहलु
7. बहोता, हेतसिंह – राजस्थान के इतिहास की रूपरेखा

8. त्रिवेदी, हिम्मतलाल – बांसवाड़ा, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक चेतना का संबंधित इतिहास
9. सहगल, के.के. – राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ बांसवाड़ा
10. जोशी, करूणा – जनजातीय क्षैत्रों में स्वतंत्रता ओन्दोलन (वांगड़, डूंगरपुर के सन्दर्भ में), राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2008
11. चौधरी, हेमेन्द्र – राजपूताना में प्रजामंडल आन्दोलन (1938– 1948 ई.), हिमांशु पब्लिकेशन, दिल्ली, 2012
12. बोहरा, मलिक – डूंगरपुर राज्य की भित्ति चित्रांकन परम्परा समाज एवं संस्कृति
13. जोशी, करूणा – डूंगरपुर राज्य की राजव्यवस्था, 1998
14. परिहार, विनिता – राजस्थान में प्रजामण्डल, आन्दोलन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2013